जवाहर गोयल

बी-6/11 अभ्युदय
सोसायटी आनंदपुर
कोलकाता- 717
मो. 983146917

ताऊ जी से बात करवा दो

आवाज भर्राई हुई थी भारी
मैं उसके गुस्से का अभ्यस्त था रोने का नहीं
फोन पर बिलखते कहा उसने
पापा ताऊ से बात करवा दो
दस हजार मील और सात समुन्दर पार से
सुनता चीत्कार का सन्नाटा मौन था झन्नाता
क्यों क्या हुआ तुझको ठीक है ना तू
क्या बात है बोल
पापा ताऊजी से बात करनी है
कल से सोचती थी तुमसे कहूंगी
ताऊजी से मेरी बात करवा दो
अच्छा नहीं लगता कोई नहीं है जो
बराबरी देता मुझसे बात करता
मुझे केवल उनसे बात करनी है

कुछ नहीं कहने का भार बढ़ता गया क्षण भर में
फोन दूरियों को दूनी दूर कर देता
छोड़ना चाहकर भी छूटी नहीं मेरी चतुरता
तुम उन पर मेरा लेख पढ़ लो
नहीं, मुझे उनसे बात करवा दो
तुम लेपटॉप पर उनकी तस्वीर देख लो
देख मन में उनसे बात कर लो
नहीं तुम बात करवा दो
यही हम सभी चाहते हैं
ताऊजी से बात कर लें
बात कर उनसे अपने मन की कह दें
कहता नहीं पर जानता हूँ कभी-कभी कहने से बढ़कर
कुछ नहीं होता
हममें हर कोई उनसे बात करने को
आपस में ही बात कर लेता
और वो जहां भी हैं वहीं से उसी तरह
अपने को भूल
पीड़ा में हमारी लहक छूकर
हमें दोगुन कर
हकलाते उत्साह से भर कह उठते
अरे वाह तुम
क्या खूब
पर ऐसी क्यों
और अपना हाथ धरते
गाल छूकर कन्धों पर
जब कुछ भला कर पाते लगता
हमने उनसे बात की है
तुम भी कुछ भला कर जानो कि
बेटी तुमने उनसे बात कर ली है

सारे दिन

सारे दिन बारिश रही
सारे दिन हवा चली
सारे दिन पेड़ झुके रहे
सारे दिन शाम थी
चिड़िया सारे दिन साथ रही

पानी

बोलना बंद किया पर
तब भी कहना जारी रहा
सुनने में बाधा था भीतरी कोलाहल
इसीलिए बाहर आ अँधेरे में
पत्तों पर झूमती बारिश को सुनता रहा
वहां पानी भिगोता घोलता धोकर सभी कुछ
अपने साथ मुझको भी धरती में बहाता गया

अनुमान

पक्षी नहीं केवल पक्षियों की ध्वनियां और
अँधेरे में पक्षियों के होने के अनुमान
प्रातः के पूर्व प्रकाश के आने के अनुमान
नींद की कोरों पर स्वप्नों के होने के अनुमान
जागकर सोये रहे होने के अनुमान
अनुमानों में असल था अपने खोते जाने का ज्ञान